# || प्रथम अध्याय ||

## -: अध्याय एक :-

## " निराला का जीवन परिचय "

१.१ जन्म,

१.२ नाम,

१.३ पारिवारीक जानकारी

१.४ बाल्यकाल,

१.५ शिक्षा

१.६ विवाह

१.७ प्रभाव

१.८ नौकरियाँ

१.९ व्यक्तित्व

१.१० हिन्दी प्रेम

१.११ वज्रघात

१.१२ अंत के पूर्व दिन।

## निराला का जीवन परिचय

"निराला" आधुनिक हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ प्रतिभावान कवि हैं। उनके विशाल व्यक्तित्व और बहुमुखी साहित्य की छाप सारे हिन्दी संसार पर छायी है, जिन्हें कौन नहीं जानता। छायावाद की बृहत त्रयी में उनका नाम है तथा प्रगतिवाद के वे प्रथम कवि हैं, उनकी प्रतिभा के पैंतालीस साल हिन्दी साहित्य में ऐसे बिखरे हैं, जिसे हम कभी भी अनदेखा नहीं कर सकते। भावमयी कोमलता तथा पौरुषता से युक्त कृतित्व और व्यक्तित्व पाने वाले कवि "निराला" का आयुष्य संघर्ष तथा वेदनासे भरा हुआ था। समस्त मानवता के प्रति जागरूकता उनके भावुक व्यक्तित्व को भी प्रमाणीत करती है। विद्रोही कवि निराला "काव्यकला" को सौंदर्य की पूर्ण सीमा मानते हैं। तथा उसको बन्धनो से मुक्त करने की उनकी अभिलाषा थी। "परिमल" की भूमिका में वे लिखते हैं - "साहित्य की मुक्ति उसके काव्य में देख पडती है। इस तरह जाति के मुक्ति प्रयास का पता चलता है। धीरे धीरे चित्र प्रियता छुटने लगती है। मन एक खुली हुई प्रशस्त भूमि में विहार करना चाहता है।"[१] कहना यह है कि यह मुक्त होने की भावना निराला में अत्याधिक प्रबल है। वे कही बँध नहीं सके, उनका जीवन अनेक दृष्टिसे निराला था। निराला का काव्य तथा साहित्य उनके व्यक्तिगत जीवन के अभिव्यक्ति की प्रति छाया है। इस दृष्टि के कारण उनके जीवन को तथा व्यक्तित्व को जानना आवश्यक है।

### १.१ जन्म :

महाकवि पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" का जन्म १८९७ में बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल नामक रियासत में माघ मास के वसंत पंचमी के दिन हुआ।

१·२ नाम :

महाकवि निराला का पूरा नाम सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" था। लोगों का कहना है कि निराला की माँ एक तो सूर्य का व्रत रखती थी, दूसरे इनका जन्म रविवार को हुआ यही कारणा है कि इनका नाम सूर्यकुमार रखा गया। आगे चलकर स्वयं कविने इसे सूर्यकान्त में बदल दिया। "मतवाला" की मुक पर इन्होंने सूर्यकान्त त्रिपाठी के आगे निराला और जोड दिया। पं· गंगाप्रसाद ने "महाप्राण",[२] विश्वभर "मानव" ने काव्य का देवता",[३] बच्चनसिंह ने क्रान्तीकारी[४], डॉ· जयनाथ नलिन ने "काव्य-पुरुष"[५], जानकी बल्लभ शास्त्री ने "महाकवि"[६], डॉ· कृष्णदेव झारी ने "युगकवि"[७], श्री गंगाधर मिश्र ने "युगाराध्य"[८], डॉ· बुध्दसेन निहार ने "विश्व कवि"[९], तथा रूसी विद्वान बाराम्निकोफ ने "महामानव"[१०], उपाधिसे सन्मानित किया है।

१·३ पारिवारीक जानकारी :

निरालाजी के पिता का नाम पंडित रामसहाय त्रिपाठी था। वह उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में गढा कोला नामक गाँव के निवासी थे। वे कान्यकुब्ज ब्राम्हण थे। रामसहाय त्रिपाठी की दूसरी पत्नी रुक्मिणि की कोख से निराला का जन्म हुआ जिनका देहान्त निराला की ढाई वर्ष की आयु में हो गया। श्री रामसहाय त्रिपाठी हृष्टपुष्ट और डीलडौल के व्यक्ति थे। वे पहले गवर्नर बंगाल के अंगरक्षक रहे, बाद में राजा साहब महिषादल ने उन्हे अपने यहाँ बुला लिया था। बाल्यकाल में पालन पोषण इनकी चाची और भाभी ने किया। निराला जी का जन्म का परिवारीक नाम सूर्यकुमार त्रिपाठी था। पत्नी मनोहरा देवी, पुत्र रामकृष्ण तथा पुत्री सरोज ऐसा परिवार सन १९१६ में था। इन दिनों महिषादल रियासत में राजा के यहाँ

निराला सहाय्यक नियुक्त हो गये थे। सन् १९१७ में पिता, सन १९१८ में प्रिय पत्नी तथा महमारी में बडे भाई, पर दादा, भाभी और भाभी की दूध पिती बच्ची चल बसी। निराला के यौवन के आरंभ काल में ही पारिवारीक विपत्तियों के पहाड़ टुट पड़े और प्रिय पुत्री सरोज की मृत्युसे निराला को भारी सदमा पहुँचा। इस मृत्यु की शृंखला से कवि बार - बार इष्ट देवी के शारण में गये। जिसे रामविलास शर्मा अपने शब्दो में इस तरह व्यक्त करते है, " चारों ओर मृत्यू की विभीषिका इस वातावरण में - निराला - ने अपना साहित्यिक जीवन आरम्भ किया। वैसे अपने भौतिक जीवन के आरम्भ में ही वह मातृ स्नेह से वंचित हो गये थे। मानों उसी अभाव की पुर्ति के लिए उन्होने अपने गीतो में इष्ट देवी के रूप में बार - बार अपनी दिवंगता जननी को पुकारा है - अनगिनित आ गये शारण में जन, जननि " [११]

## १.४ बाल्यकाल :

निराला के जन्म के ढाई वर्ष पश्चात ही इनकी माता की मृत्यू हो गयी। उनके जन्म से पूर्व ही पिता रामसहाय महिषादल नरेश के यहाँ नौकर हो चुके थे। " पिता के पुरातन पन्थी कट्टर विचारों, अत्याधिक क्रोध और राजसी वातावरण ने निराला को विद्रोही, असहनशील, अहंकारी और लापरवाह बना दिया। " [१२] बचपन से ही निराला का स्वभाव उध्दत था। राजकुमारो के संसर्ग में बचपना गुंजरने के कारण उन्हे बन्धन और भी विद्रोही बना देते थे। कभी वे अपनी उध्दतता के कारण पितासे बुरी तरह पिटे जाते थे जिसका जिक्र उन्होने स्वयं किया है — मारते वक्त पिताजी इतने तन्मय हो जाते थे कि वे भूल जाते थे कि दो विवाह के बाद पाये हुए इकलौते पुत्र को मार रहे हैं। मैं भी स्वभाव न बदल पाने के कारण मार

खाने का आदी हो गया था।" [13] शरीर से काफी स्वस्थ होने के कारण खेलकुद में लगे रहते थे। क्रिकेट तथा फुटबॉल के बहुत अच्छे खिलाडी थे। संगीत का भी विशेष शौक था। महिषादल राजा के छोटे भाई उन्हे बहुत पसंद करते थे। इनका पालन पोषण शिक्षा - दिक्षा का प्रबंध राज्य कोष से हुआ। जब वे सात-आठ वर्ष के थे, तब ही बंगला में कविता लिखने लगे थे। बंगाल में बसने के कारण उनकी मातृभाषा बंगाली हो गयी थी। कविंद्र रविंद्रनाथ की रचनाओं को वह बाल्यकालसे ही पढ़ते थे। निरालाजी के पिताजी का संबंध रियासत से था। अत: उनका परिवार काफी भरा पुरा और सुख से संपन्न था किन्तु सभी दिन एक जैसे नही रहते उनके बाल्यकालसे ही संकटोंने उन्हे झकझोर दिया।

## १.५ शिक्षा :

निराला की प्रारंभिक शिक्षा बंगाल में ही प्रारंभ हुई और बंगालमें ही रहकर उन्होने हायस्कूल का अध्ययन किया। निरालाजी के पिताजी जिस राज्य में रहते थे, वही से अध्ययन का खर्च भी मिलता था। किन्तु हायस्कूल से अधिक न पढ़ सके, इनका एकमात्र कारण उनकी स्वतंत्र प्रियता थी। इनका स्वभाव अध्ययनशिल था परंतु पाठ्यक्रम की पुस्तके नहीं पढ़ते थे। गणित में बहुत कमजोर थे। इस कारण आगे पढना इनके लिए कठिण काम हो गया था। साथ ही साथ कविंद्र रविंद्र नवे दर्जे से अधिक नही पढ सके थे यही आदर्श उन्होने अपने स्वतंत्र प्रियता में जोड रखा। इन्होंने मन में निश्चय किया कि, कवि रविंद्र यदी कम शिक्षा लेकर महाकवि बन सकते हैं, तो मैं क्यो नहीं बन सकता ? पग - पगपर उन्हे अनेक अनपेक्षित घटंनाओं ने जखडने पर भी वे अपने निश्चय, इसी संदर्भ से हटे नहीं, दृढता से कविता लिखते रहे। आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री अपने विचार इस तरह प्रकट करते हैं -- " पराजय और पलायन के चिन्ह निराला में नही है, इसका कारण है पहले अपने उपर अखण्ड विश्वास,

फिर जनता की शक्तियों पर अटूट आस्था ही है।" [१४] इसी कारण उन्होनें एण्ट्रेन्स परीक्षा पास किये बिना पढ़ना छोड़ दिया। परंतु एण्ट्रेन्स तक पहूँचते - पहूँचते इन्होंने राजकीय पुस्तकालय से अँगेरजी, बँगला एवं संस्कृत अनेक काव्य-ग्रंथ पढ डाले। गीता और रामायन का भी उन्होने अध्ययन किया। दर्शन संबंधी अनेक पुस्तके पढ़ डाली। पाठशाला छोड दी किन्तु पाठशालीय शिक्षा के अतिरिक्त निराला ने सभी ललित कलाओं का गहण अध्ययन किया था। संगीत विदया से वे अच्छे परिचीत थे। हारमोनियम बजाते - बजाते वे उसपर संगित की आलापे लेते थे। क्रिकेट, फुटबॉल के अच्छे खिलाडी थे। घोडे की सवारी तथा तैरने में इन्हे अधिक रूची थी। वे बंदुक अच्छि तरह से चलाते थे। पंजा लडाने का भी उन्हे शौक रहा है। कुश्ती लडने और जीतने की प्रवृत्तिके पिछे निराला का शक्ति प्रेम स्पष्टता से दिखाई देता है। उनकी कुश्ती की चर्चा करना खतरे से खाली भी नही हैं। डॉ. परशुराम शुक्ल " विरही " ने लिखा है कि, " कहते है कि कुश्ती में निरालाने विश्व - विख्यात पहलवान गामा को भी पराजीत कर दिया था। पौरुष निराला का स्वभाव ही है।" [१५] बाल्यकाल बंगाल के साहित्यिक वातावरण तथा सामान्य जनजीवन में गुजरने के कारण वे प्रारंभिक काल में बंगाल की बैसवाडी ही बोलते रहे होंगे। परंतु प्रेरणादायी विदुषी पत्नी के कारण तथा स्वअध्ययन से हिन्दी पर उनका अधिकार जम गया।

## १.६ विवाह :

सन १९१२ में लगभग १४ वर्ष की अल्पायु में १२ वर्ष की मनोहरा देवी से इनका विवाह हुआ। मनोहरादेवी रायबरेली जिले में डलमऊ के पंडित रामदयाल की पुत्री थी। वे सुंदर, शिक्षित तथा संगीत से परिचित थी। सन १९१४ में पुत्र रामकृष्ण तथा सन १९१७ में पुत्री सरोज का जन्म हुआ। निराला केवल बाईस वर्ष की आयु में विधुर हो गये। लोगों के बहुत आग्रह करने पर भी तथा

कुंडली योग होते हुये भी इन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। इसका कारण डॉ. गणेश दत्त सारस्वत के दृष्टि से इस प्रकार हैं — " पत्नी की मृत्यू के बाद तो जैसे कवि के जीवन से समस्त मधुरताओं का अन्त ही हो गया। उन्हें लगा जैसे आज वे असहाय हो गये हैं, किसी उपाय से भी उस अभाव की पुर्ति करने में असमर्थ है। " [१६] मातृत्व तथा पितृत्व प्रेम से वे जिस तरह अधुरे रहे उसी तरह वैवाहिक जीवन से उसे उन्हे अधुरा रहना पडा। बाल्य-काल से विधुरता तक इनपर इतने विधि के प्रहार हुये जिससें उनमें आघातों को सहने की क्षमता आ गयी थी, अनेक परिस्थितियाँ इनके विचारों की दृढता को कभी भी हिला नहीं सकी। सहनशील निर्भिक तथा भाउक व्यक्तित्व ने अहित को अस्विकार किया इसका महत्वपूर्ण कारण हैं, पारिवारीक सांस्कृतिक क्षमता। इस बारे में गंगाप्रसाद पाण्डेय जी लिखते हैं — " उनके जीवन के चारों ओर परिवार का वह लौहसार घेरा नहीं जो व्यक्तिगत विशेषताओं पर चोट करता है तथा बाहर की चोटों के लिए ढाल भी बन जाता है। " [१७] | मातृत्व प्रेम तथा पितृत्व छाया से वे जिस तरह अधुरे रहे उसी तरह वैवाहिक जीवन से उसे उन्हे अधुरा रहना पडा।

१.७ प्रभाव :

जीवन के पहले दो दशक बंग भूमि, बंग संस्कृति तथा साहित्य से उनका व्यक्तित्व प्रभावित रहा। निरालाने जो बाल्यकाल में जो दु:ख सह लिये उसका उनके व्यक्तित्व निर्माण होने पर कैसा प्रभाव रहा यह डॉ. कृष्णदेव झारी इस तरह व्यक्त करते हैं — " निराला का बचपन पुराने कनौजिया ब्राम्हण रीतिरिवाजों में बीता था, जो बालक की सहज विद्रोही प्रवृत्ति के विरुद्ध था। पिता का कडा अनुशासन और मार-पीठ भी उन्हे सहन करनी पडती थी। किन्तु सामाजिक और धार्मिक रूढियों से उन्हे

मन ही मन नफरत थी। यही कारण है कि पिता की मृत्यू के बाद उनका स्वतंत्र जीवन उनके विद्रोही, निर्भीक और प्रखर व्यक्तित्व के निर्माण में सहाय्यक हुआ।" [१८] पंडित महावीर प्रसाद जी के संपर्क में आने के कारण भाउक कवि उनके विचारों की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन के फल स्वरूप अपने जीवन की कठिनाईयों का सामना करते करते साहित्य साधना प्रारंभ की। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी की प्रेरणा से श्री रामकृष्ण मिशन के प्रधान केंद्र " बैलूर" जाकर परमहंस रामकृष्ण और स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक सिध्दातों का अध्ययन करने लगे। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी-जी के प्रयत्न से रामकृष्ण मिशन के दार्शनिक पत्र 'समन्वय' के संपादन का कार्य मिल गया, इसमें दार्शनिक विषय पर काफी सुंदर लेख लिखे। इसका प्रभाव इनके रहस्यानुभुति से युक्त तथा दार्शनिकता से युक्त कविताओं में मिलता है।" निराला में रहस्य की गुढताएँ उतनी नहीं है, जितनी दर्शन की विवृति और उनकी दार्शनिकता मुख्यत: भक्तिपरक तथा वेदान्ती प्रभावों से युक्त है।" [१९] स्वामी विवेकानंदजी के मानवतावादी विचारों का प्रभाव उसके व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर नजर आता है। " स्वामी विवेकानंद भारतीय ज्ञान, दर्शन और मानवता के सच्चे प्रतिनिधि है। उन्नीसवी शताब्दी में आत्ममन्थन से महावराह के रूप में हमे जिस विवेकानंद की उपलब्धि हुई उसी के काव्य - व्यक्तित्व का प्रसाद निराला [ १८९६ - १९६९ ] का जीवन और कृतित्व है " [२०] आदि को विचारों का इनपे काफी प्रभाव था। सांस्कृतिक एवं राजनीतिक हलचल से युक्त महानगर कलकत्ता में उनके जीवन के महत्वपुर्ण दस बरस इनके व्यक्तित्व में प्रभावदायी रहे चुके हैं। श्री रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानंद से अध्यात्मिक स्फुर्ति लेने के कारण उनमें विश्व माणवतावाद तथा साम्य समाजवाद के विचार नजर आते हैं। स्वामी शारदानंद महाराजसे इन्हों ने दीक्षा ली थी। इसी कारण उनके साहित्य में अध्यात्म तथा विशुध्द मानवतावाद प्राय: नजर आता है। तत्कालीन

राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिस्थितियों का प्रभाव इनके व्यक्तित्व पर नजर आता है। राजनीतिक क्षेत्र के नेता महात्मा गांधी के विचारों का काफी प्रभाव इनके साहित्य में प्रस्फुटित हुआ है। इन सबके प्रभाव के कारण उनका साहित्य क्रांतीकारी बना है। -- जिसमें लोकमंगल की आदर्श भावना कायम स्थित है। इसलिए " निरालाजी का नाम आधुनिक काल के महान क्रान्तिकारी कलाकारों मे लिया जाता हैं। उनकी अनेक रचनाओ में विद्रोह का स्वर मुखरित होता हैं। " २१

## १.८ नौकरियाँ :

इक्कीस वर्ष के आयु में इनके कंधो पर दो बच्चो तथा चार भतीजो के पालन पोषन का भार आ पड़ा। निराला इस घटना से कभी भी विचलीत नहीं हुये, वे अपने कर्तव्य को निभाते रहे। -- " अवर्णनीय दु:ख और विचित्र अनुभव ग्रहण करके भी परिवार के अग्रज होने के नाते वे सारा भार संभालने के लिए तैयार थे। गंगा के तट पर बैठा कवि संसार की नश्वरता पर घंटो विचार करता। " २२ इस विषम परिस्थिति से नौकरी की खोज में निराला पुन: महिषादल आ गये, यहाँ इन्हे राजा की यहाँ नोकरी मिल गयी इन दिनों कवि रूप में इन्हे पर्याप्त प्रसिध्दि भी प्राप्त हो चुकी थी। राजा गाने बजाने के शौकिन थे, एक बार किसी नाटक के रिहर्सल में उन्होने संस्कृत का एक छंद पढ़ा। राजा ने स्वर की माधुरी पर मुग्ध होकर इनकी शिक्षा का प्रबंध कर दिया। एक दिन एक साधु को लेकर इनमें और राजा के " हाउस होल्ड सुपरिन्टेन्डन्ट " में झगडा हो गया। यह बात बढने पर नोकरी छोड दी। वे अपना स्वाभिमान के कारण किसी के सामने झुकने नहीं देते, चाहे इसके लिए कुछ भी करना पड़े, इस का एक उदाहरण यह हैं -- " एक बार रामगढ के स्वर्गीय राजा चक्रधरसिंह ने सोचा था कि हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि, सर्वश्रेष्ठ कथकार और सर्वश्रेष्ठ आलोचक को अपने राज्यकोष से आर्थिक सहायता

प्रदान कर अपने यहाँ रखा जाय। फलत: निरालाजी [ कवि ] मुंशी प्रेमचंद [ कथाकार ] और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी [ आचार्य - आलोचक ] के पास निमत्रंण भेजे गये। प्रेमचंद जी ने सीधा जवाब दें दिया और निराला जी ने निमंत्रण पत्र को फाडकर अपनी प्रतिक्रया प्रकट की। अनका उन्मुक्त व्यक्तित्व भला कहीं किसी राजा या धनपति का बंधन स्वीकार कर सकता था। उन्होनें आत्म - सम्मान को जरा भी कही झुकने नही दिया।" [२३] आगे इन्हों ने कलम की मजदूरी का रास्ता पकड़ा। जो भी लिखने को मिलता वह लिखते और जीविका कमाते। उनकी कलम की मजदूरी बढ़ाने के लिए वे उनका बिकाऊमना नहीं था, पैसा कमाना अलग मानते थे, साहित्य तो साधना से बनता है उसमें समाजहित होना आवश्यक समझते थे। इस संदर्भ में " कमलेश " से हुई बातचीत और भी स्पष्टता से यह प्रमाणित करती है -- " साहित्य साधना से बनता है। हमें केवल रूपया तो कमाना नहीं है। साहित्य ऐसा देना है, जो जन-हित का हो और उसमें कुछ जान हो, पर लोग समझते ही नहीं।" [२४] आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रयत्न से रामकृष्ण मिशन के दार्शनिक पत्र " समन्वय " के संपादन का कार्य मिल गया। " समन्वय " में एक वर्ष तक ही नौकरी की, इन्हीं दिनों कलकत्ता के साहित्य प्रेमी सेठ महादेव प्रसाद ने साहित्यिक,सामाजिक एवं राष्ट्रीय जागरण के विचार से " मतवाला " नामक पत्रिका निकालने की योजना बनाई - जिसमें संपादन का कार्य निराला पर आ पड़ा। यहाँ भी उन्हों ने एक वर्ष तक ही कार्य किया और त्याग पत्र देकर गाँव चल आये। सन् १९२८ तक इन्होने लखनो में अपनी कलम के सहारे आर्थिक संकट को दूर करने का प्रयास किया। सन १९२८ में " सुधा " नामक पत्रिका से साहित्यिक रचनाओं का स्वागत हुआ। सन १९२९ में दुलारे लाल भार्गव द्वारा संचलित गंगा पुस्तक माला से जुड गये और उसमें काम करने लगे। इसी के साथ इन्हें " सुधा " का संपादन कार्य भी मिल गया। सन १९३२ में " रंगीला " नामक पत्र के संपादक होकर कलकत्ता गये। वहाँ मानसिक स्थिति स्थिर न रहने के कारण फिर लखनौ आ गये आगे लिडर प्रेस की सहायता से साहित्यिक कृतियाँ प्रकाशित करते रहे। नौकरी न मिलने के कारण आर्थिक विपन्नता इन्हे लातार सताती रही।

१.९ व्यक्तित्व :

निराला का शारीरिक गठन अत्यंत आकर्षक एवं सुव्यवस्थित था। छ फूटसे कुछ कम उँचे, भरा हुआ शरीर, रंग गेहूँआ तथा आँखो गांभीर्य और ऋषि की भाँती या विद्वानों के भाँती लम्बे बाल इसी कारण वे ग्रीक दार्शनिक की भाँति नजर आते थे। पंडित गंगाप्रसाद पाण्डेयजी पर निराला का प्रथम दर्शन इस तरह अमिट छाप छोड देता है — " इस प्रथम दर्शन से ही निराला जी के सौम्य और साथ ही दु:शासन व्यक्तित्व ने बहुत अधिक प्रभावित कर लिया। मैं ने हिन्दी के प्राय: सभी कवियों को देख रखा था, पर किसी की इतनी अमिट छाप मुझे पर न पडी थी।" [२५] पाण्डेय जी ने इनका वर्णन इस प्रकार किया है, " लम्बा चौडा, विशाल मांसल शरीर, बडे - बडे रतनारे नेत्र, लंबी शाल की शाखा सी भुजाये, शाश्वत मंद मुस्कान में सिक्त पतले आकर्षक ओठ, कवियोंचित कम्बु, कण्ठ और वृषभ कन्ध।" [२६] उनके नेत्र के बारे में श्रीमती रामेश्वरी शर्मा, इंद्राणी मुखर्जी, महादेवी वर्मा तथा अन्य लेखकों के विशेष मत प्राप्त होते हैं जिसमें से महादेवी वर्मा का यह मत - अविराम संघर्ष और निरंतर विरोध का सामना करने से जो एक आत्मनिष्ठा उत्पन्न हो गयी है। उसका परिचय हम उनकी दृप्त दृष्टि में पाते हैं।" [२७] वेश के बारे में उदासीन ही रहते थे परंतु कवि संमेलनों में सजधज कर पहूँचते थे। " बढिया कुर्ता, महीन धोती, रेशमी चादर, बाल सुवासित और हाथ में घडी होती थी और यदि लौटते समय कोई अभाव ग्रस्त मिल जाता तो फिर उनके पास कुछ भी नहीं रह जाता था। निराला को खेलो का तथा कुस्ती का शौक था। साहित्यिकों में इस तरह का आकर्षण मेरे विचार से कम ही होता है परंतु इनके आकर्षक शारीरिक गठन का यही एक रहस्य ही था। निराला को खाने और खिलाने का शौक था। मांसाहार उनका प्रिय भोजन था। कभी - कभी वे मदिरा पिते थे। पान, तम्बाकू, सुरती हर समय खाते थे। जब उसके पास कही से धन की प्राप्ति होती तभी वह अपने मित्रों को निमत्रंण देते थे और स्वयं भोजन

बनाकर खिलाते थे। इनके खाऊ दोस्त तो इनके गरीबी के कारण रहे, परंतु निराला पैसा न होने पर प्राय: चने चबा कर रह जाते। निराला अपने जीवन में पैसे के पिछे कभी लगे, वे निरंतर फक्कड फकीर की तरह रहे, जो भी मिलता उसे अपनो में बाँटते मगर पैसे के पिछे कभी उन्हों ने उपने मन को बेचा नहीं। इस बारे में डॉ. संतोष गोयल का मत इस तरह व्यक्त हुआ है — " शरीर के लिए उन्हों ने आत्मा को नहीं बेचा। भूखे रहकर भी अपने आन पर अडे रहेने में उसके साथ किसी दूसरे का नाम नहीं लिया जा सकता। " [२८] निराला को प्रकृतिने मधुर कंठ दिया था। शुरू से ही वे बहुत अच्छे गाते थे। रियासत में सिपाहियों के बीच बैठकर श्री रामचरित मानस का पाठ सस्वर करते थे। कहा जाता है कि निराला की कविता उनके मुख से सुनने पर जितना प्रभावित करती थी उतना पढ जानेपर नही। निराला एक उदार हृदय वाले कवि थे, उनके पास आनेवाले हर एक व्यक्ति का वह अतिथ्य करना कर्तव्य समझते थे। उन्हे रुढियों से चिड थी। वे एक विद्रोही व्यक्तित्व वाले कवि थे, जिनके बारे में गंगाप्रसाद पाण्डेय लिखते हैं — " अस्तु, आज के काल बिन्दु पर खडे होकर जब हम अपने साहित्य के पिछले पचास वर्ष के इतिहास की ओर मुडकर देखते हैं तब सहज ही में यह जान पाते हैं कि निराला का विराट - विद्रोही व्यक्तित्व हमारी सारी साहित्य धरती को अपने विशाल और प्रबुध्द सृजन की शीतल छाया से छाये हुए है। " [२९] उन्होने समाज के अनेक बंधनों को तोडकर अपने लडके तथा लडकी की शादी की थी। सदैव नविन की खोज करते थे। प्रकृति के प्रति उनका स्वाभाविक आकर्षण था इसी कारण उनके कविता कहानी उप-न्यासों में प्रकृति के नैसर्गिक चित्र उभर आये है। निराला स्वभाव से बडे ही भावूक और निर्भिक थे। उन्हे अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम था। आत्मभिमान एवं आत्मविश्वास निराला के व्यक्तित्व के दो पहलू हैं। निराला में जितनी असाधारण गुणवत्ता थी उतनी ही असंतुलित वृत्ति।

यह असंतुलित वृत्ति जीवन में एक मार्गीयता नहीं ला सकी, इस कारण उनका जीवन महान कवि कबिर के जैसा असंतुलित रहा। इनके बारे में डॉ. भगीरथ मिश्र इस तरह मत व्यक्त करते हैं — " अपनी उग्र स्वच्छन्दता और फक्कडपन में वे कबीर से तुलनीय है। वैसे ही मस्तमौला, वैसे ही ललकार, वैसा ही फक्कडपन, वैसा ही क्रान्तीकारी स्वर और वैसी ही प्रगाढ तन्मयता। दोनों की ओज भरी वाणी रूढियों और बन्धनों के विरोध में बेलगाम प्रहार करती रही। दोनों में लोगों को प्रसन्न करने की प्रवृत्ति नहीं थी। स्वाभिमान भी दोनों में उँची श्रेणी का था। अन्तर केवल इतना ही था कि एक सन्त पहले था और कवि बाद में था और दूसरा कवि पहले, सन्त बाद में। किन्तु निरालाने भी लुकाटा ले अपना घर जलाकर ही साहित्य रचा था। इसके पीछे उस भारती के पुत्र ने अपना सब कुछ लुटा दिया, अपने आप लुट गया था, परन्तु मरते दम तक उस स्वाभिमानी निर्भिक कवि ने हार नहीं मानी थी, और साहित्यकार के सम्मान को सबसे उँचा रखा। उसने भीख दी पर ली नहीं। " [30]

१.१० हिन्दी प्रेम :

निराला जिस स्कूल में पढते थे, वहाँ अँगरेजी, बँगला तथा संस्कृत की शिक्षा दी जाती थी, परन्तु हिंदी के अध्ययन की कोई सुविधा नहीं थी। परंतु हिन्दी के प्रति इनमें सहज स्वाभाविक आकर्षण था। रामचरितमानस और ब्रजविलास पढ़ा करते थे। इस तरह इनका हिन्दी का ज्ञान धीरे धीरे बढ़ता गया। सुशिल पत्नी के सानिध्य से इनका हिन्दी का ज्ञान विकसीत हुआ।

१.११ वज्रघात :

निराला ढ़ाई वर्ष के थे कि, इनकी माँ की मृत्यू हो गयी। इनके

यौवन के आरम्भकाल में ही पारिवारीक विपत्तियों के पहाड टूट पडे। सन १९१७ में पिता की मृत्यू हुई। सन १९१८ में उनकी प्रिय पत्नी की मृत्यू हुई, वहाँ से जब गढाकोला पहूँचे तो रास्ते में दादाजाद बडे भाई का शव मिला। तीसरे दिन भाभी की मृत्यू हो गयी। इसके उपरांत चाचा भी चल बसे। परिणाम स्वरूप इनके कंधो पर परिवार का भार आ पडा। सन १९३६ में इनकी प्रिय पुत्री सरोज की मृत्यू इनके जीवन में सब से बडी दु:खद घटना थी।

## १.१२ अन्त के पूर्व दिन :

निरन्तर संघर्ष, सामाजिक साहित्यिक विरोध, अर्थ विपन्नता, अभाव तथा बीमारियों ने निराला को जर्जर कर दिया था। सन १९५५ में निराला पर बध्दपीहा प्रकोप हुआ। वे उन दिनो पागल से हो गये थे। १५ जनवरी १९५५ को उन्हे पागलखाने जाने का सरकारी आदेश मिला था। इंद्राणी मुखर्जी ने अपने एक संस्मरण में लिखा है कि, " किस प्रकार उन्हों ने प्रथमबार उनकी तस्वीर को देखकर वे खिलखिला उठे थे। एक कवि के विषय में चाहे कोई कोमल शरीर, घुंगराले गर्दन तक लटकते लंबे बाल, बडी बडी आँखे, पतला - दुबला मानो दुनिया के सभी गुणों को अपने में समेटे हो शरीर की कल्पना कर ले किंन्तु एक युग निर्माता तथा युग सृष्टा के लिए निराला जैसे विशाल व्यक्तित्व की कल्पना ही मेरे मस्तिष्क में ठीक उतरती हैं। " [३१] १९६० से उनकी बीमारी गंभीरता में बदल गयी और उनका शरीर क्रमश: क्षीण होता गया। १५ अगस्त, १९६१ को इस साहित्यदेवता निराला का स्वर्गवास हुआ। इनके मृत्यू पर समस्त हिन्दी संसार शोकाभिभूत हो गया - परंतु उनकी यह लिखीत पक्तियाँ उनके जीवन की व्याख्या बन गयी।

" दु:ख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज जो नहीं कही। " [३२]

उपर्युक्त विवेचन से यह ध्यान में आता है कि, निराला एक महान विभुती है। नये मानवतावादी, अध्यात्मवादी, बुध्दिवादी, यथार्थवादी, सौंदर्यवादी, पौरुषवादी, नविनतावादी, कवि है, जिसमें भावुकता, संघर्षशीलता, आत्मनिष्ठा, पारिवारिकता, वैयक्तिक सामाजिकता, विनम्रता अंतर्भुत थी। जिनका व्यक्तित्व तथा कृतित्व महान होने के कारण उनके लिए साहित्यक्षेत्र की सबसे बडी उपाधि " महाप्राण " भी कम महसुस होते हैं।

## -: अध्याय एक :-

### पाद टिप्पनी -[संदर्भ सुची]

पृष्ठ


१. निराला : परिमल : भूमिका १७

२. श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय महाप्राण निराला - शीर्षक

३. डॉ. विश्वंभर "मानव" : काव्य का देवता निराला : शीर्षक

४. डॉ. बच्चनसिंह : क्रान्तीकारी कवि निराला : शीर्षक

५. डॉ. ज्यनाथ नलिन : काव्य पुरुष निराला : शीर्षक

६. जानकी वल्लभ शास्त्री : महाकवि निराला : शीर्षक

७. श्री. गंगाधर मिश्र : युगाराध्य निराला : शीर्षक

८. डॉ. कृष्णदेव झारी : युगकवि निराला : शीर्षक

९. बुंधदसेन निहार : विश्वकवि निराला : शीर्षक

१०. सं. प्रेमनारायण टण्डन : रसवंती : निराला विशेषांक १३५

११. डॉ. गणेश दत्त सारस्वत : महाप्राण निराला ६०

१२. सुरेशचंद्र निर्मल : आधुंनिक हिन्दी काव्य और कवि १२९

१३. डॉ. रामविलास शर्मा : निराला ६७

१४. आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री : त्रयी ३७

१५. डॉ. परशुराम शुक्ल "विरही" : आधुनिक कवियोंका जीवन दर्शन ६१

१६. डॉ. गणेश दत्त सारस्वत : महाप्राण निराला ६०

१७. श्री. गंगाप्रसाद पाण्डेय : महाप्राण निराला १०

१८. डॉ. कृष्णदेव झारी : युगकवि निराला ४

१९. डॉ. शिवकुमार मिश्र : नया हिन्दी काव्य ६८

२०. डॉ. रामरतन भटनागर : निराला और नवजागरण ६६

| | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| २१. | डॉ. विद्यनाथ गुप्त : हिन्दी कवितामें राष्ट्रीय भावना | ३४९ |
| २२. | डॉ. संतोष गोयल : निराला का काव्य | १४ |
| २३. | डॉ. कृष्णदेव झारी : युगकवि निराला | ८ |
| २४. | पद्मसिंह शर्मा "कमलेश" : मैं इनसे मिला | ५३/५४ |
| २५. | गंगाप्रसाद पाण्डेय : तीन महाकवि | ६ |
| २६. | गंगाप्रसाद पाण्डेय : महाप्राण निराला | १५४ |
| २७. | डॉ. संतोष गोयल : निराला का काव्य | १४ |
| २८. | वही | १२ |
| २९. | गंगाप्रसाद पाण्डेय : तीन महाकवि | ७५ |
| ३०. | डॉ. भगीरथ मिश्र : निराला काव्य का अध्ययन | ३१ |
| ३१. | डॉ. उमाशंकर सिंह : निराला का निरालापण | १०८ |
| ३२. | निराला : अपरा | १५८ |